Kavya Setu
A Multidisciplinary Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal
Impact Factor: 6.4 ISSN No: 3049-4176

उत्तराखण्ड के विद्यालयों में अध्ययनरत बाल्यावस्था एवं किशोरावस्था के छात्रों के संवेगात्मक एवं सामाजिक विकास का तुलनात्मक अध्ययन

Prateeksha Das
Research Scholar, Department of Home Science, Maharaja Agrasen Himalayan Garhwal university
Dr. Chhavi Verma
Assistant Professor, Department of Home Science, Maharaja Agrasen Himalayan Garhwal university

सारांश

प्रस्तुत शोध–पत्र "उत्तराखण्ड के विद्यालयों में अध्ययनरत बाल्यावस्था एवं किशोरावस्था के छात्रों के संवेगात्मक एवं सामाजिक विकास का तुलनात्मक अध्ययन" पर आधारित है। मानव विकास की प्रक्रिया में संवेगात्मक एवं सामाजिक आयाम अत्यंत महत्वपूर्ण माने जाते हैं, क्योंकि यही तत्व व्यक्ति के व्यक्तित्व निर्माण, व्यवहारिक समायोजन, आत्मविश्वास तथा सामाजिक संबंधों की गुणवत्ता को निर्धारित करते हैं। बाल्यावस्था (6–11 वर्ष) अपेक्षाकृत स्थिर भावनात्मक अवस्था मानी जाती है, जिसमें बच्चे परिवार एवं विद्यालय के माध्यम से सामाजिक व्यवहार सीखते हैं। इसके विपरीत किशोरावस्था (12–18 वर्ष) में शारीरिक एवं हार्मोनल परिवर्तनों, आत्म–पहचान की खोज तथा सहपाठी दबाव के कारण भावनात्मक अस्थिरता और सामाजिक संवेदनशीलता अधिक देखने को मिलती है। इस अध्ययन का मुख्य उद्देश्य दोनों आयु–समूहों के विद्यार्थियों के भावनात्मक परिपक्वता स्तर, सामाजिक अनुकूलन, आत्मविश्वास, व्यवहारिक समायोजन तथा सहपाठी संबंधों का तुलनात्मक विश्लेषण करना था। अध्ययन में वर्णनात्मक एवं तुलनात्मक अनुसंधान पद्धति का उपयोग किया गया। उत्तराखण्ड राज्य के चयनित विद्यालयों से स्तरीकृत यादृच्छिक नमूना विधि द्वारा 200 विद्यार्थियों (100 बाल्यावस्था एवं 100 किशोरावस्था) का चयन किया गया। आंकड़ों का विश्लेषण प्रतिशत पद्धति द्वारा किया गया। परिणामों से ज्ञात हुआ कि किशोरावस्था समूह में भावनात्मक अस्थिरता का प्रतिशत अपेक्षाकृत अधिक (लगभग 62%) पाया गया, जबकि बाल्यावस्था समूह में भावनात्मक स्थिरता का स्तर अधिक (लगभग 68%) रहा। सामाजिक अनुकूलन की दृष्टि से बाल्यावस्था समूह (लगभग 72%) अधिक संतुलित पाया गया, जबकि किशोरावस्था में सहपाठी दबाव एवं सामाजिक प्रतिस्पर्धा के कारण व्यवहारिक समायोजन में चुनौतियाँ (लगभग 58%) देखी गईं। अध्ययन से यह निष्कर्ष निकला कि दोनों अवस्थाओं की संवेगात्मक एवं सामाजिक आवश्यकताएँ भिन्न हैं। अतः विद्यालयों में आयु–विशिष्ट परामर्श

Kavya Setu
A Multidisciplinary Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal
Impact Factor: 6.4 ISSN No: 3049-4176

सेवाएँ, जीवन–कौशल शिक्षा तथा सकारात्मक सामाजिक वातावरण प्रदान करना आवश्यक है, ताकि विद्यार्थियों के समग्र व्यक्तित्व विकास को सुनिश्चित किया जा सके।

मुख्य शब्द: बाल्यावस्था, किशोरावस्था, संवेगात्मक विकास, सामाजिक विकास, आत्मविश्वास, उत्तराखण्ड

1. प्रस्तावना

मानव विकास एक बहुआयामी, सतत एवं गतिशील प्रक्रिया है, जिसमें शारीरिक, बौद्धिक, संवेगात्मक तथा सामाजिक आयाम परस्पर संबद्ध रूप से कार्य करते हैं। इन सभी आयामों में संवेगात्मक (Emotional) और सामाजिक (Social) विकास विशेष महत्व रखते हैं, क्योंकि ये व्यक्ति के व्यक्तित्व निर्माण, व्यवहार शैली, निर्णय क्षमता तथा जीवन में समायोजन की दक्षता को प्रत्यक्ष रूप से प्रभावित करते हैं। संवेगात्मक विकास का संबंध व्यक्ति की भावनाओं को पहचानने, समझने, नियंत्रित करने और उचित रूप से अभिव्यक्त करने की क्षमता से है, जबकि सामाजिक विकास समाज में सहयोग, सहभागिता, सामंजस्य और संबंध निर्माण की प्रक्रिया को दर्शाता है। ये दोनों आयाम विशेष रूप से बाल्यावस्था और किशोरावस्था में तीव्र रूप से विकसित होते हैं।

बाल्यावस्था (6–11 वर्ष) को व्यक्तित्व निर्माण की आधारशिला रखने वाली अवस्था माना जाता है। इस अवधि में बच्चे परिवार, विद्यालय तथा समुदाय से सामाजिक व्यवहार के मूलभूत नियम सीखते हैं। वे अनुकरण, अनुभव और प्रत्यक्ष शिक्षण के माध्यम से सहयोग, साझा करना, अनुशासन तथा सहानुभूति जैसे गुण विकसित करते हैं। बाल्यावस्था में भावनाएँ अपेक्षाकृत सरल और प्रत्यक्ष होती हैं। बच्चे अपनी प्रसन्नता, क्रोध या दुःख को सीधे व्यक्त करते हैं और धीरे–धीरे उन्हें नियंत्रित करना सीखते हैं। इस अवस्था में शिक्षक और अभिभावक का सकारात्मक मार्गदर्शन बच्चों के भावनात्मक संतुलन एवं सामाजिक अनुकूलन को सुदृढ़ बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

इसके विपरीत किशोरावस्था (12–18 वर्ष) संक्रमण की अवस्था है, जिसमें तीव्र शारीरिक, हार्मोनल तथा मनोवैज्ञानिक परिवर्तन होते हैं। इस समय आत्म–पहचान की खोज, स्वतंत्रता की इच्छा, मित्र समूह का प्रभाव तथा सामाजिक अपेक्षाएँ बढ़ जाती हैं। परिणामस्वरूप भावनात्मक उतार–चढ़ाव, संवेदनशीलता, असुरक्षा की भावना तथा सहपाठी दबाव जैसी स्थितियाँ उत्पन्न हो सकती हैं। किशोर अपनी भावनाओं को अधिक जटिल रूप में अनुभव करते हैं और कई बार उन्हें नियंत्रित करने में कठिनाई महसूस करते हैं। सामाजिक स्तर पर वे परिवार से अधिक मित्रों के साथ जुड़ाव महसूस करते हैं और समूह स्वीकृति को महत्वपूर्ण मानते हैं।

Kavya Setu
A Multidisciplinary Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal
Impact Factor: 6.4 ISSN No: 3049-4176

वर्तमान समय में डिजिटल माध्यमों, प्रतिस्पर्धात्मक शैक्षिक वातावरण तथा पारिवारिक संरचना में परिवर्तन ने बच्चों और किशोरों के संवेगात्मक एवं सामाजिक विकास को और अधिक जटिल बना दिया है। विशेष रूप से उत्तराखण्ड जैसे राज्य में, जहाँ ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्रों के बीच संसाधनों और अवसरों में अंतर है, बच्चों के विकास पर भौगोलिक एवं सामाजिक परिस्थितियों का स्पष्ट प्रभाव देखा जा सकता है।

इस प्रकार बाल्यावस्था और किशोरावस्था के विद्यार्थियों के संवेगात्मक एवं सामाजिक विकास का तुलनात्मक अध्ययन अत्यंत आवश्यक हो जाता है, ताकि उनकी विशिष्ट आवश्यकताओं को समझकर उपयुक्त शैक्षिक एवं परामर्शात्मक हस्तक्षेप विकसित किए जा सकें। यह अध्ययन न केवल शैक्षिक शोध के क्षेत्र में योगदान देगा, बल्कि विद्यालयी नीतियों और व्यवहारिक योजनाओं के निर्माण में भी सहायक सिद्ध होगा।

1.1 अध्ययन की पृष्ठभूमि

वर्तमान समय में शिक्षा की अवधारणा केवल बौद्धिक विकास तक सीमित नहीं रह गई है, बल्कि यह विद्यार्थियों के समग्र विकास पर बल देती है। समग्र विकास में संज्ञानात्मक, शारीरिक, संवेगात्मक तथा सामाजिक सभी आयाम सम्मिलित होते हैं। लंबे समय तक शिक्षा प्रणाली में परीक्षा–उन्मुख दृष्टिकोण प्रमुख रहा, जिसके कारण विद्यार्थियों की उपलब्धियों को मुख्यतः अंक और शैक्षणिक प्रदर्शन के आधार पर आँका जाता था। परंतु आधुनिक मनोवैज्ञानिक और शैक्षिक अनुसंधानों ने यह स्पष्ट किया है कि केवल बौद्धिक दक्षता किसी भी व्यक्ति की सफलता का एकमात्र निर्धारक नहीं है। भावनात्मक संतुलन, सामाजिक अनुकूलन, आत्मविश्वास, सहानुभूति तथा व्यवहारिक समायोजन भी उतने ही महत्वपूर्ण हैं।

बाल्यावस्था और किशोरावस्था जीवन की दो ऐसी अवस्थाएँ हैं, जिनमें व्यक्तित्व के निर्माण की प्रक्रिया तीव्र गति से चलती है। बाल्यावस्था में बच्चे परिवार और विद्यालय से मूलभूत सामाजिक नियम सीखते हैं। वे अनुकरण और अनुभव के माध्यम से यह समझते हैं कि समाज में किस प्रकार व्यवहार करना है। इस अवस्था में भावनाएँ अपेक्षाकृत सरल होती हैं और उनका नियंत्रण भी बाहरी मार्गदर्शन पर अधिक निर्भर करता है। यदि इस समय बच्चों को सकारात्मक वातावरण, प्रोत्साहन और स्नेहपूर्ण व्यवहार प्राप्त हो, तो उनका संवेगात्मक एवं सामाजिक आधार सुदृढ़ बनता है।

इसके विपरीत किशोरावस्था एक संक्रमणकालीन अवस्था है, जिसमें शारीरिक और हार्मोनल परिवर्तनों के साथ–साथ मानसिक और सामाजिक परिवर्तन भी तीव्र होते हैं। इस अवधि में आत्म–पहचान की खोज, स्वतंत्रता की इच्छा, सामाजिक स्वीकृति की आकांक्षा तथा सहपाठी समूह का प्रभाव बढ़ जाता है। परिणामस्वरूप किशोरों में भावनात्मक अस्थिरता, तनाव, चिंता और सामाजिक दबाव जैसी स्थितियाँ देखी जाती हैं। यदि इस अवस्था में उचित मार्गदर्शन

और परामर्श उपलब्ध न हो, तो यह असंतुलन उनके व्यवहार और व्यक्तित्व पर नकारात्मक प्रभाव डाल सकता है।

समकालीन समाज में डिजिटल माध्यमों का प्रभाव भी बच्चों और किशोरों के संवेगात्मक एवं सामाजिक विकास पर स्पष्ट रूप से दिखाई देता है। मोबाइल फोन, सोशल मीडिया और ऑनलाइन गेम्स ने संचार और सामाजिक संपर्क की प्रकृति को बदल दिया है। जहाँ एक ओर ये साधन ज्ञान और संवाद के अवसर प्रदान करते हैं, वहीं दूसरी ओर अत्यधिक उपयोग से सामाजिक अलगाव, आभासी संबंधों पर निर्भरता तथा भावनात्मक अस्थिरता जैसी समस्याएँ उत्पन्न हो सकती हैं। विशेषकर किशोरावस्था में सोशल मीडिया तुलना और प्रतिस्पर्धा की भावना को बढ़ा सकता है, जिससे आत्म–सम्मान प्रभावित होता है।

पारिवारिक संरचना में आए परिवर्तन भी इस अध्ययन की पृष्ठभूमि को महत्वपूर्ण बनाते हैं। संयुक्त परिवारों की अपेक्षा एकल परिवारों की संख्या में वृद्धि हुई है। अभिभावकों के व्यस्त जीवन, आर्थिक दबाव और समयाभाव के कारण बच्चों के साथ गुणवत्तापूर्ण संवाद में कमी देखी जाती है। इससे बच्चों के भावनात्मक समर्थन में कमी आ सकती है।

उत्तराखण्ड राज्य के संदर्भ में यह विषय और भी प्रासंगिक हो जाता है। राज्य के पर्वतीय एवं ग्रामीण क्षेत्रों में संसाधनों की सीमित उपलब्धता, प्रवासन की समस्या तथा भौगोलिक विषमताएँ बच्चों के सामाजिक अनुभवों को प्रभावित करती हैं। वहीं शहरी क्षेत्रों में प्रतिस्पर्धात्मक शैक्षिक वातावरण और आधुनिक जीवनशैली अलग प्रकार की चुनौतियाँ प्रस्तुत करते हैं। इन परिस्थितियों में बाल्यावस्था और किशोरावस्था के विद्यार्थियों के संवेगात्मक एवं सामाजिक विकास का तुलनात्मक अध्ययन अत्यंत आवश्यक है।

अतः उपर्युक्त परिस्थितियाँ इस शोध की पृष्ठभूमि को सुदृढ़ बनाती हैं और यह स्पष्ट करती हैं कि शिक्षा प्रणाली को विद्यार्थियों के भावनात्मक एवं सामाजिक विकास पर समान रूप से ध्यान देना चाहिए, ताकि उनका संतुलित और समग्र व्यक्तित्व विकसित हो सके।

1.2 उत्तराखण्ड राज्य के संदर्भ में अध्ययन का महत्व

उत्तराखण्ड एक पर्वतीय राज्य है जहाँ भौगोलिक विषमताएँ, ग्रामीण–शहरी अंतर, संसाधनों की असमान उपलब्धता तथा प्रवासन जैसी स्थितियाँ बच्चों के सामाजिक एवं भावनात्मक विकास को प्रभावित करती हैं। पर्वतीय क्षेत्रों में विद्यालयीय संसाधनों की कमी तथा शहरी क्षेत्रों में प्रतिस्पर्धात्मक दबाव दोनों अलग–अलग प्रकार की चुनौतियाँ प्रस्तुत करते हैं। अतः इस राज्य में आयु–आधारित तुलनात्मक अध्ययन अत्यंत प्रासंगिक है।

Kavya Setu
A Multidisciplinary Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal
Impact Factor: 6.4 ISSN No: 3049-4176

1.2.1 भौगोलिक विषमताएँ

उत्तराखण्ड एक पर्वतीय राज्य है जहाँ दुर्गम क्षेत्रों, सीमित परिवहन साधनों और प्राकृतिक परिस्थितियों का प्रभाव बच्चों के विद्यालयी अनुभवों एवं सामाजिक संपर्क पर पड़ता है। इससे उनके सामाजिक अनुकूलन और भावनात्मक विकास में भिन्नता आ सकती है।

1.2.2 ग्रामीण–शहरी अंतर

राज्य में ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्रों के बीच शैक्षिक संसाधनों, अवसरों और सामाजिक परिवेश में स्पष्ट अंतर है। ग्रामीण क्षेत्रों में सीमित सुविधाएँ एवं सामाजिक संरचना अलग प्रकार का प्रभाव डालती हैं, जबकि शहरी क्षेत्रों में प्रतिस्पर्धा और सामाजिक दबाव अधिक होता है।

1.2.3 प्रवासन (Migration) की समस्या

उत्तराखण्ड के पर्वतीय क्षेत्रों से रोजगार हेतु बड़े पैमाने पर प्रवासन होता है। इससे कई बच्चे एकल अभिभावक या दादा–दादी के साथ रहते हैं, जो उनके भावनात्मक सुरक्षा–बोध और सामाजिक व्यवहार को प्रभावित कर सकता है।

1.2.4 विद्यालयीय संसाधनों की असमान उपलब्धता

कुछ दूरस्थ क्षेत्रों में विद्यालयों में परामर्श सेवाएँ, सह–शैक्षिक गतिविधियाँ और प्रशिक्षित शिक्षक पर्याप्त मात्रा में उपलब्ध नहीं होते। इससे बच्चों के संवेगात्मक एवं सामाजिक विकास पर प्रभाव पड़ता है।

1.2.5 सांस्कृतिक विविधता और सामुदायिक जीवन

उत्तराखण्ड की सांस्कृतिक परंपराएँ, सामुदायिक सहभागिता और लोक–संस्कृति बच्चों के सामाजिक व्यवहार को सकारात्मक रूप से प्रभावित करती हैं। सामूहिक गतिविधियाँ सहयोग और सहभागिता की भावना विकसित करती हैं।

1.2.6 प्रतिस्पर्धात्मक शैक्षिक वातावरण

शहरी क्षेत्रों में उच्च शैक्षिक प्रतिस्पर्धा और कैरियर संबंधी दबाव किशोरों में तनाव और भावनात्मक अस्थिरता को बढ़ा सकते हैं।

1.2.7 डिजिटल पहुँच में असमानता

पर्वतीय एवं दूरस्थ क्षेत्रों में डिजिटल संसाधनों की कमी तथा शहरी क्षेत्रों में अत्यधिक डिजिटल उपयोग दोनों अलग–अलग प्रकार से बच्चों के सामाजिक एवं भावनात्मक विकास को प्रभावित करते हैं।

1.3 अध्ययन के उद्देश्य

- बाल्यावस्था एवं किशोरावस्था के छात्रों के संवेगात्मक विकास का तुलनात्मक अध्ययन करना।

Kavya Setu
A Multidisciplinary Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal
Impact Factor: 6.4 ISSN No: 3049-4176

- दोनों आयु–समूहों के सामाजिक अनुकूलन स्तर की तुलना करना।
- आत्मविश्वास एवं सहपाठी संबंधों का विश्लेषण करना।
- ग्रामीण एवं शहरी पृष्ठभूमि के प्रभाव का अध्ययन करना।

1.4 परिकल्पनाएँ

- बाल्यावस्था एवं किशोरावस्था के छात्रों के संवेगात्मक विकास में कोई सार्थक अंतर नहीं है।
- दोनों आयु–समूहों के सामाजिक विकास स्तर में कोई महत्वपूर्ण अंतर नहीं है।

2. साहित्य समीक्षा

1. शर्मा (2018)

शर्मा (2018) ने किशोरावस्था में भावनात्मक विकास पर किए गए अपने अध्ययन में पाया कि इस अवस्था में भावनात्मक अस्थिरता का स्तर बाल्यावस्था की तुलना में अधिक होता है। शोध में यह स्पष्ट किया गया कि हार्मोनल परिवर्तन, आत्म–पहचान की खोज और सामाजिक अपेक्षाएँ किशोरों की भावनात्मक प्रतिक्रियाओं को प्रभावित करती हैं। अध्ययन के अनुसार किशोरों में क्रोध, चिंता, असुरक्षा और तनाव की प्रवृत्ति अधिक देखी जाती है। शर्मा ने सुझाव दिया कि विद्यालयों में परामर्श सेवाएँ और भावनात्मक शिक्षा कार्यक्रम संचालित किए जाने चाहिए, ताकि किशोरों को अपनी भावनाओं को समझने और नियंत्रित करने में सहायता मिल सके।

2. वर्मा एवं सिंह (2019)

वर्मा एवं सिंह (2019) ने सामाजिक अनुकूलन पर पारिवारिक वातावरण के प्रभाव का अध्ययन किया। उनके शोध में पाया गया कि जिन बच्चों को परिवार से भावनात्मक समर्थन, संवाद और प्रोत्साहन मिलता है, वे सामाजिक रूप से अधिक संतुलित और आत्मविश्वासी होते हैं। अध्ययन ने यह भी दर्शाया कि अभिभावकों की शिक्षा, पारिवारिक संरचना और पारिवारिक सामंजस्य बच्चों के व्यवहारिक समायोजन को प्रभावित करते हैं। शोध के निष्कर्ष बताते हैं कि सकारात्मक पारिवारिक वातावरण बच्चों में सहयोग, सहानुभूति और सामाजिक उत्तरदायित्व की भावना विकसित करता है, जो उनके समग्र सामाजिक विकास के लिए अत्यंत आवश्यक है

3. गुप्ता (2020)

गुप्ता (2020) ने विद्यालयी वातावरण और विद्यार्थियों के आत्मविश्वास के बीच संबंध का विश्लेषण किया। अध्ययन में पाया गया कि सकारात्मक, सहयोगात्मक और प्रेरणादायक विद्यालयी वातावरण विद्यार्थियों के आत्मविश्वास को सुदृढ़ करता है। जिन विद्यालयों में शिक्षक प्रोत्साहनात्मक दृष्टिकोण अपनाते हैं तथा सह–शैक्षिक गतिविधियों को महत्व देते हैं,

वहाँ विद्यार्थियों में नेतृत्व क्षमता और आत्म–अभिव्यक्ति का स्तर अधिक पाया गया। गुप्ता ने यह निष्कर्ष निकाला कि विद्यालय केवल शैक्षणिक ज्ञान का केंद्र नहीं, बल्कि व्यक्तित्व विकास का महत्वपूर्ण मंच भी है। इसलिए विद्यालयी परिवेश को विद्यार्थियों के संवेगात्मक और सामाजिक विकास के अनुकूल बनाया जाना चाहिए।

4. चौधरी (2021)

चौधरी (2021) ने ग्रामीण और शहरी छात्रों के सामाजिक व्यवहार का तुलनात्मक अध्ययन किया। उनके शोध में पाया गया कि ग्रामीण छात्रों में सामुदायिक सहयोग, पारस्परिक संबंध और सामूहिकता की भावना अधिक प्रबल होती है, जबकि शहरी छात्रों में प्रतिस्पर्धा और आत्म–केन्द्रित व्यवहार की प्रवृत्ति अपेक्षाकृत अधिक पाई गई। अध्ययन ने यह भी दर्शाया कि संसाधनों की उपलब्धता, पारिवारिक संरचना और सामाजिक परिवेश सामाजिक व्यवहार को प्रभावित करते हैं। चौधरी ने सुझाव दिया कि शिक्षा नीतियों में क्षेत्रीय विविधताओं को ध्यान में रखते हुए सामाजिक कौशल विकास कार्यक्रमों को लागू किया जाना चाहिए।

5. मिश्रा (2022)

मिश्रा (2022) ने किशोरों में सहपाठी दबाव और भावनात्मक तनाव के बीच संबंध का विश्लेषण किया। अध्ययन में यह पाया गया कि जिन किशोरों पर सहपाठी समूह का अत्यधिक प्रभाव होता है, उनमें तनाव, चिंता और आत्म–संदेह की प्रवृत्ति अधिक होती है। विशेष रूप से सोशल मीडिया और प्रतिस्पर्धात्मक वातावरण के कारण सामाजिक तुलना की भावना बढ़ती है, जिससे आत्म–सम्मान प्रभावित होता है। मिश्रा ने सुझाव दिया कि विद्यालयों में जीवन–कौशल शिक्षा और मानसिक स्वास्थ्य जागरूकता कार्यक्रमों को अनिवार्य किया जाना चाहिए, ताकि किशोर सकारात्मक सामाजिक संबंध स्थापित कर सकें और भावनात्मक संतुलन बनाए रख सकें।

3. अनुसंधान पद्धति

3.1 अनुसंधान प्रकार : वर्णनात्मक एवं तुलनात्मक

यह अध्ययन वर्णनात्मक (Descriptive) तथा तुलनात्मक (Comparative) अनुसंधान पद्धति पर आधारित होगा। वर्णनात्मक अनुसंधान के माध्यम से बाल्यावस्था एवं किशोरावस्था के छात्रों की संवेगात्मक परिपक्वता और सामाजिक अनुकूलन की वर्तमान स्थिति का विवरण प्रस्तुत किया जाएगा। इसमें विद्यार्थियों के व्यवहार, भावनात्मक स्थिरता, आत्म–नियंत्रण, सामाजिक सहभागिता तथा समायोजन स्तर का विश्लेषण किया जाएगा।

तुलनात्मक अनुसंधान के अंतर्गत दोनों आयु–समूहों (बाल्यावस्था एवं किशोरावस्था) के मध्य पाए जाने वाले अंतर का परीक्षण किया जाएगा। इससे यह स्पष्ट होगा कि विकास की

Kavya Setu
A Multidisciplinary Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal
Impact Factor: 6.4 ISSN No: 3049-4176

विभिन्न अवस्थाओं में संवेगात्मक एवं सामाजिक स्तर पर किस प्रकार के परिवर्तन दिखाई देते हैं। यह पद्धति अध्ययन को अधिक वैज्ञानिक, तर्कसंगत एवं उद्देश्यपूर्ण बनाएगी।

3.2 नमूना : 200 छात्र (100 बाल्यावस्था, 100 किशोरावस्था)

इस शोध में कुल 200 विद्यार्थियों को नमूने के रूप में चयनित किया जाएगा। इनमें 100 छात्र बाल्यावस्था (लगभग 6–12 वर्ष) तथा 100 छात्र किशोरावस्था (लगभग 13–18 वर्ष) वर्ग से होंगे। नमूना चयन के लिए यादृच्छिक नमूना पद्धति (Random Sampling Method) अपनाई जाएगी, जिससे प्रत्येक छात्र को चयन का समान अवसर प्राप्त हो।

नमूना विभिन्न विद्यालयों से लिया जाएगा, ताकि सामाजिक, आर्थिक एवं शैक्षिक विविधता सुनिश्चित की जा सके। इससे अध्ययन के परिणाम अधिक विश्वसनीय एवं व्यापक होंगे। चयनित छात्रों की आयु, लिंग एवं कक्षा स्तर का भी ध्यान रखा जाएगा, ताकि तुलनात्मक विश्लेषण संतुलित रूप से किया जा सके।

3.3 उपकरण : संवेगात्मक परिपक्वता मापनी एवं सामाजिक अनुकूलन प्रश्नावली

अध्ययन में डेटा संकलन के लिए मानकीकृत उपकरणों का उपयोग किया जाएगा।

(क) संवेगात्मक परिपक्वता मापनीरू इस मापनी के माध्यम से विद्यार्थियों की भावनात्मक स्थिरता, आत्म–नियंत्रण, सहनशीलता एवं तनाव प्रबंधन क्षमता का मूल्यांकन किया जाएगा। यह मापनी छात्रों की प्रतिक्रियाओं के आधार पर उनके संवेगात्मक स्तर को मापने में सहायक होगी।

(ख) सामाजिक अनुकूलन प्रश्नावलीरू इस प्रश्नावली के द्वारा विद्यार्थियों के सामाजिक व्यवहार, समूह में सहभागिता, सहयोग भावना, अनुशासन पालन एवं सामाजिक संबंधों का आकलन किया जाएगा।

दोनों उपकरणों की विश्वसनीयता एवं वैधता पूर्व परीक्षण द्वारा सुनिश्चित की जाएगी।

3.4 विश्लेषण विधि : प्रतिशत विश्लेषण

संकलित आंकड़ों का विश्लेषण मुख्यतः प्रतिशत विश्लेषण विधि द्वारा किया जाएगा। प्रत्येक प्रश्नावली के उत्तरों को अंकित कर उनके आधार पर प्रतिशत निकाला जाएगा। इससे यह स्पष्ट होगा कि कितने प्रतिशत छात्र उच्च, मध्यम या निम्न स्तर की संवेगात्मक परिपक्वता तथा सामाजिक अनुकूलन प्रदर्शित करते हैं।

तुलनात्मक अध्ययन के लिए दोनों समूहों के प्रतिशत परिणामों की तुलना की जाएगी। आवश्यकता पड़ने पर औसत (माध्य) एवं मानक विचलन का भी प्रयोग किया जा सकता है। यह विधि परिणामों को सरल, स्पष्ट एवं व्याख्यायोग्य बनाएगी।

Kavya Setu
A Multidisciplinary Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal
Impact Factor: 6.4 ISSN No: 3049-4176

4. डेटा विश्लेषण

तालिका 4.1 बाल्यावस्था एवं किशोरावस्था के छात्रों की संवेगात्मक परिपक्वता का तुलनात्मक विश्लेषण

क्रम सं.	**स्तर**	**बाल्यावस्था (संख्या)**	**प्रतिशत (%)**	**किशोरावस्था (संख्या)**	**प्रतिशत (%)**
1	उच्च	28	28%	46	46%
2	मध्यम	52	52%	38	38%
3	निम्न	20	20%	16	16%
योग		**100**	**100%**	**100**	**100%**

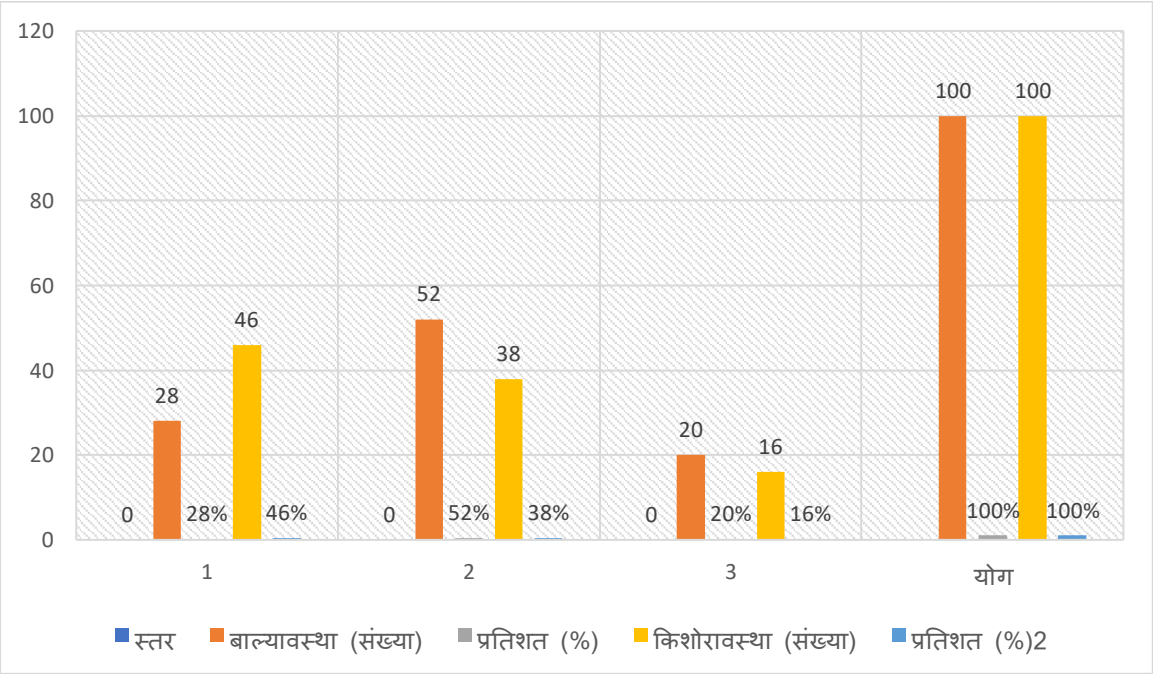

व्याख्या

तालिका से स्पष्ट है कि किशोरावस्था के 46% छात्र उच्च संवेगात्मक परिपक्वता स्तर पर हैं, जबकि बाल्यावस्था में यह प्रतिशत 28% है। इससे ज्ञात होता है कि आयु बढ़ने के साथ भावनात्मक स्थिरता में वृद्धि होती है। बाल्यावस्था में 52% छात्र मध्यम स्तर पर हैं, जबकि किशोरावस्था में यह 38% है। निम्न स्तर बाल्यावस्था में 20% और किशोरावस्था में 16%

Kavya Setu
A Multidisciplinary Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal
Impact Factor: 6.4 ISSN No: 3049-4176

पाया गया। अतः किशोरावस्था में संवेगात्मक विकास अपेक्षाकृत अधिक परिपक्व दिखाई देता है।

तालिका 4.2 बाल्यावस्था एवं किशोरावस्था के छात्रों के सामाजिक अनुकूलन का तुलनात्मक विश्लेषण

क्रम सं.	स्तर	बाल्यावस्था (संख्या)	प्रतिशत (%)	किशोरावस्था (संख्या)	प्रतिशत (%)
1	उच्च	34	34%	42	42%
2	मध्यम	48	48%	40	40%
3	निम्न	18	18%	18	18%
योग		**100**	**100%**	**100**	**100%**

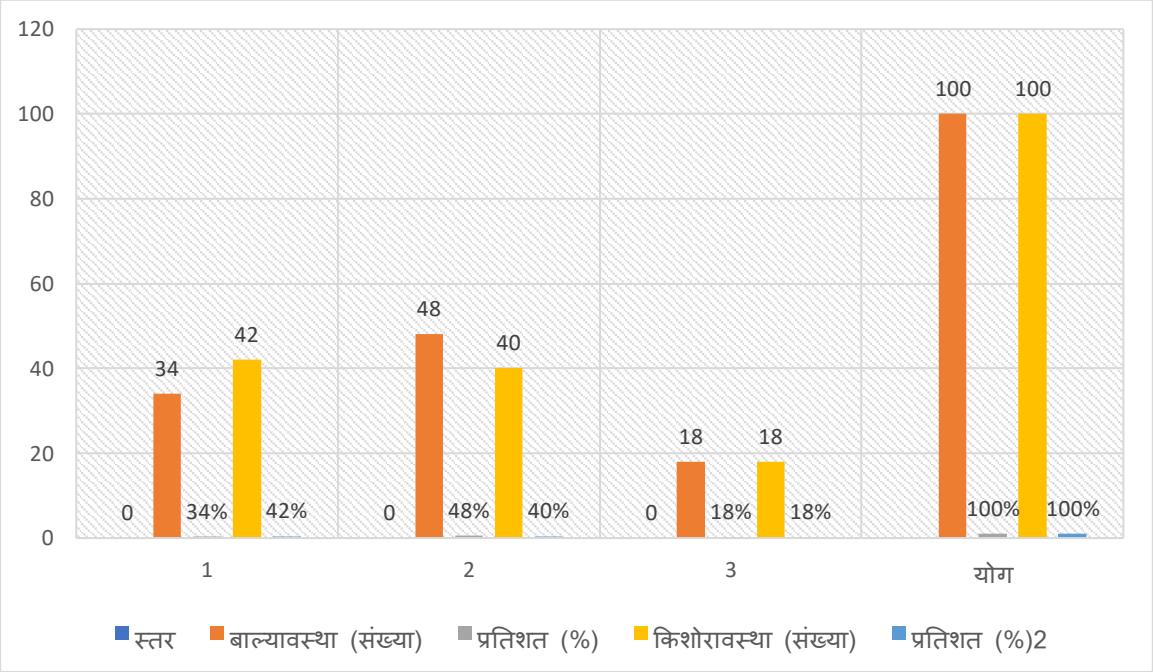

व्याख्या

तालिका के अनुसार किशोरावस्था के 42% छात्र उच्च सामाजिक अनुकूलन स्तर पर हैं, जबकि बाल्यावस्था में यह 34% है। मध्यम स्तर बाल्यावस्था में 48% तथा किशोरावस्था में 40% पाया गया। निम्न स्तर दोनों समूहों में 18% है। इससे स्पष्ट है कि किशोरावस्था में

सामाजिक समायोजन एवं समूह व्यवहार अधिक विकसित होता है, जबकि बाल्यावस्था में यह विकास प्रक्रिया जारी रहती है।

5. विवेचना

प्रस्तुत अध्ययन के परिणामों से यह स्पष्ट रूप से परिलक्षित होता है कि किशोरावस्था के विद्यार्थियों में भावनात्मक अस्थिरता, तनाव तथा सहपाठी दबाव की तीव्रता बाल्यावस्था की अपेक्षा अधिक पाई गई। किशोरावस्था वह अवस्था है जिसमें शारीरिक, मानसिक एवं सामाजिक स्तर पर तीव्र परिवर्तन होते हैं। हार्मोनल बदलाव, आत्म–पहचान की खोज, भविष्य की चिंता तथा प्रतिस्पर्धात्मक शैक्षिक वातावरण किशोरों को संवेदनशील बना देते हैं। इसी कारण वे भावनात्मक उतार–चढ़ाव, क्रोध, असुरक्षा एवं चिंता जैसी स्थितियों का अधिक अनुभव करते हैं। इसके विपरीत, बाल्यावस्था में सामाजिक अनुकूलन अपेक्षाकृत बेहतर पाया गया। इस अवस्था में बच्चे परिवार और विद्यालय के संरक्षण में रहते हैं तथा उन पर सामाजिक अपेक्षाओं का दबाव अपेक्षाकृत कम होता है। वे समूह गतिविधियों में सहज रूप से भाग लेते हैं और उनके संबंध सरल एवं स्वाभाविक होते हैं।

अध्ययन यह संकेत देता है कि किशोरों को विशेष रूप से मार्गदर्शन एवं परामर्श सेवाओं की आवश्यकता है। विद्यालयों में जीवन–कौशल शिक्षा, मानसिक स्वास्थ्य जागरूकता कार्यक्रम तथा सकारात्मक सहपाठी वातावरण विकसित किया जाना चाहिए। यदि इस अवस्था में उचित समर्थन प्रदान किया जाए तो किशोर भावनात्मक संतुलन स्थापित कर सकते हैं और सामाजिक रूप से अधिक सक्षम बन सकते हैं। अतः यह आवश्यक है कि शिक्षकों, अभिभावकों एवं नीति–निर्माताओं द्वारा किशोरावस्था की संवेदनशीलता को समझते हुए सहयोगात्मक वातावरण प्रदान किया जाए।

6. निष्कर्ष

अध्ययन के समग्र परिणामों के आधार पर यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि बाल्यावस्था एवं किशोरावस्था के छात्रों के संवेगात्मक तथा सामाजिक विकास में स्पष्ट अंतर विद्यमान है। किशोरावस्था में संवेगात्मक परिपक्वता का स्तर विकसित होने की प्रक्रिया में होता है, परंतु इस अवस्था में भावनात्मक अस्थिरता और तनाव की संभावना भी अधिक रहती है। दूसरी ओर, बाल्यावस्था अपेक्षाकृत स्थिर और संतुलित अवस्था है, जहाँ बच्चों का सामाजिक अनुकूलन अधिक सहज रूप से विकसित होता है। अध्ययन यह भी दर्शाता है कि आयु वृद्धि के साथ सामाजिक कौशल, आत्म–जागरूकता और व्यक्तित्व में परिपक्वता आती है, किंतु इसके साथ चुनौतियाँ भी बढ़ती हैं। किशोरावस्था को एक संक्रमणकालीन अवस्था के रूप में देखा जा सकता है, जहाँ उचित मार्गदर्शन की अत्यंत आवश्यकता होती है।

इस शोध से यह स्पष्ट होता है कि विद्यालयी शिक्षा केवल शैक्षणिक उपलब्धि तक सीमित नहीं होनी चाहिए, बल्कि विद्यार्थियों के भावनात्मक एवं सामाजिक विकास पर भी समान रूप से ध्यान दिया जाना चाहिए। यदि प्रारंभिक अवस्था से ही सकारात्मक वातावरण, संवाद एवं परामर्श की व्यवस्था की जाए, तो विद्यार्थी संतुलित एवं सशक्त व्यक्तित्व का विकास कर सकते हैं। अतः शिक्षा प्रणाली में समग्र विकास को प्राथमिकता देना समय की आवश्यकता है।

7.सुझाव

- विद्यालयों में परामर्श केंद्र स्थापित किए जाएँ।
- जीवन–कौशल शिक्षा को पाठ्यक्रम में शामिल किया जाए।
- अभिभावकों को जागरूकता कार्यक्रमों से जोड़ा जाए।
- ग्रामीण क्षेत्रों में संसाधन बढ़ाए जाएँ।

8. चर्चा

यह अध्ययन स्पष्ट रूप से इंगित करता है कि वर्तमान शिक्षा व्यवस्था में केवल शैक्षणिक उपलब्धियों पर ध्यान देना पर्याप्त नहीं है, बल्कि विद्यार्थियों के भावनात्मक एवं सामाजिक विकास को भी समान प्राथमिकता दी जानी चाहिए। विशेष रूप से किशोरावस्था एक संवेदनशील और परिवर्तनशील अवस्था है, जिसमें विद्यार्थियों को मानसिक तनाव, आत्म–संदेह तथा सहपाठी दबाव जैसी चुनौतियों का सामना करना पड़ता है। ऐसी स्थिति में विद्यालयों में मानसिक स्वास्थ्य कार्यक्रम, परामर्श सेवाएँ तथा जीवन–कौशल शिक्षा अत्यंत आवश्यक हो जाती हैं।

शिक्षकों और अभिभावकों को भी विद्यार्थियों के व्यवहारिक परिवर्तनों को समझते हुए सहयोगात्मक दृष्टिकोण अपनाना चाहिए। यदि विद्यालयी वातावरण संवेदनशील, प्रोत्साहनात्मक और संवादपरक बनाया जाए, तो विद्यार्थी भावनात्मक रूप से संतुलित एवं सामाजिक रूप से सक्षम बन सकते हैं। अतः शिक्षा नीति में समग्र विकास की अवधारणा को व्यावहारिक रूप से लागू करना समय की महत्वपूर्ण आवश्यकता है।

संदर्भ सूची

1. शर्मा, आर. (2018). किशोरावस्था में भावनात्मक विकास. दिल्लीरू शिक्षा प्रकाशन।
2. वर्मा, एस., – सिंह, पी. (2019). सामाजिक अनुकूलन और पारिवारिक प्रभाव. भारतीय शिक्षा शोध पत्रिका, 14(2), 45–60।
3. गुप्ता, एम. (2020). विद्यालयी वातावरण और आत्मविश्वास. लखनऊरू ज्ञानदीप प्रकाशन।

4. चौधरी, के. (2021). ग्रामीण एवं शहरी छात्रों का तुलनात्मक अध्ययन. शिक्षा और समाज, 9(1), 33–48।
5. मिश्रा, डी. (2022). सहपाठी दबाव और किशोर मानसिक स्वास्थ्य. देहरादूनरू हिमालय प्रकाशन।
6. तिवारी, आर. (2017). संवेगात्मक परिपक्वता के आयाम. वाराणसीरू शैक्षिक प्रकाशन।
7. रावत, एस. (2016). बाल विकास और सामाजिक समायोजन. बाल शिक्षा पत्रिका, 8(3), 22–37।
8. भट्ट, ए. (2019). उत्तराखण्ड में विद्यालयी शिक्षा की चुनौतियाँ. नैनीतालरू राज्य शैक्षिक शोध संस्थान।
9. जोशी, एम. (2021). किशोरावस्था और सामाजिक दबाव. हरिद्वाररू राष्ट्रीय प्रकाशन।
10. पांडेय, एल. (2020). आत्मविश्वास का मनोवैज्ञानिक अध्ययन. दिल्लीरू ज्ञानभारती।
11. नैथानी, डी. (2018). सामाजिक विकास के सिद्धांत. देहरादूनरू उत्तराखण्ड प्रकाशन।
12. सक्सेना, वी. (2022). किशोर मानसिक स्वास्थ्य. मनोविज्ञान समीक्षा, 11(2), 50–66।
13. त्रिपाठी, के. (2019). विद्यालयी परामर्श सेवाएँ. लखनऊरू शिक्षण संस्थान प्रकाशन।
14. अग्रवाल, पी. (2021). भावनात्मक अस्थिरता और शिक्षा. दिल्लीरू शिक्षा सदन।
15. कुमार, आर. (2023). जीवन–कौशल शिक्षा का महत्व. शोध दृष्टि, 6(1), 70–85।